आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 13 अंक : 9 मई, 2026 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास

कुलगुरु सन्देश

जलवायु परिवर्तन के दौर में पशुपालनः प्रभाव, अनुकूलन एवं भविष्य की दिशा

जलवायु परिवर्तन वर्तमान समय की एक जटिल एवं बहुआयामी वैश्विक चुनौती है, जिसका प्रभाव मानव जीवन के साथ–साथ कृषि एवं पशुपालन जैसे आधारभूत क्षेत्रों पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है। राजस्थान जैसे शुष्क एवं अर्ध–शुष्क प्रदेश में जहाँ प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता सीमित है, यह प्रभाव और अधिक गंभीर एवं व्यापक रूप में अनुभव किया जा रहा है। राज्य के अनेक भागों में ग्रीष्मकालीन तापमान 40 से 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाना अब सामान्य होता जा रहा है, जिससे पशुधन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। उच्च तापमान के कारण पशुओं में उष्मा तनाव की समस्या तेजी से बढ़ रही है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी दुग्ध उत्पादन क्षमता में 10 से 25 प्रतिशत तक कमी देखी गई है। वैज्ञानिक अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ है कि अत्यधिक तापमान की स्थिति में पशुओं की आहार ग्रहण करने की क्षमता घट जाती है, जिससे उनके शारीरिक विकास एवं प्रजनन दक्षता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त रोगों की संवेदनशीलता में भी वृद्धि होती है, जिससे पशुपालकों पर आर्थिक भार बढ़ता है। जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से चारे एवं जल संसाधनों की उपलब्धता भी प्रभावित हो रही है। राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा लगभग 100 मिमी से 500 मिमी के बीच रहती है, जो पहले से ही अनिश्चित एवं असमान रूप से वितरित है। हाल के वर्षों में वर्षा के पैटर्न में और अधिक अनियमितता देखी गई है, जिसके कारण हरे चारे का उत्पादन 15 से 20 प्रतिशत तक प्रभावित होने का अनुमान है। इसके साथ ही केंद्रीय भूजल बोर्ड के आकलनों के अनुसार राज्य के कई जिलों में भूजल स्तर में निरंतर गिरावट दर्ज की जा रही है, जिससे पशुओं के लिए पेयजल की उपलब्धता एक गंभीर चुनौती बनती जा रही है। राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लगभग 60 से 70 प्रतिशत परिवार प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पशुपालन पर निर्भर हैं। ऐसी स्थिति में जलवायु परिवर्तन का प्रभाव न केवल पशुओं के स्वास्थ्य एवं उत्पादन पर पड़ता है, बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था, आजीविका सुरक्षा एवं सामाजिक स्थिरता को भी प्रभावित करता है। इन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में यह आवश्यक हो जाता है कि पशुपालन को अधिक सुदृढ़, लचीला एवं जलवायु–अनुकूल बनाया जाए। उष्मा–सहनशील देशी नस्लों जैसे थारपारकर एवं राठी का संरक्षण एवं संवर्धन इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है, क्योंकि ये नस्लें उच्च तापमान एवं सीमित संसाधनों में भी अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन करती हैं। इसके अतिरिक्त, सूखा–सहिष्णु चारा फसलों का विकास, चारा संरक्षण तकनीकों का विस्तार, वर्षा जल संचयन एवं सूक्ष्म जल प्रबंधन पद्धतियों को अपनाना समय की आवश्यकता है। पशु आवास प्रबंधन में सुधार करते हुए उचित हवादार, छायांकन एवं ताप नियंत्रण उपायों को बढ़ावा देना भी उष्मा तनाव के प्रभाव को कम करने में सहायक सिद्ध होगा। साथ ही पशुपालकों को नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों, रोग नियंत्रण एवं जलवायु अनुकूलन उपायों के संबंध में निरंतर प्रशिक्षण प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है। अंततः यह स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन पशुपालन क्षेत्र के समक्ष एक दीर्घकालिक चुनौती के रूप में उभर रहा है, जिसका समाधान समन्वित प्रयासों, वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रभावी नीतिगत हस्तक्षेप एवं पशुपालकों की सक्रिय सहभागिता के माध्यम से ही संभव है। यदि राजस्थान में सतत एवं जलवायु–अनुकूल पशुपालन पद्धतियों को प्राथमिकता दी जाए तो न केवल इस चुनौती का प्रभावी प्रबंधन किया जा सकता है, बल्कि पशुपालन को अधिक लाभकारी, सुदृढ़ एवं भविष्य उन्मुख बनाया जा सकता है। इसी दूरदर्शी दृष्टिकोण के माध्यम से राज्य के पशुपालन क्षेत्र को नई दिशा प्रदान करते हुए ग्रामीण समृद्धि, आत्मनिर्भरता एवं सतत विकास के लक्ष्य को साकार किया जा सकता है।

डॉ. सुमंत व्यास

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

विश्व पशुचिकित्सा दिवस का आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में 25 अप्रेल को विश्व पशुचिकित्सा दिवस –2026 के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। विश्व पशु चिकित्सा दिवस इस वर्ष "पशु चिकित्सक : भोजन और स्वास्थ्य के संरक्षक" थीम पर मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व कुलगुरु राजुवास, बीकानेर प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि मानव स्वास्थ्य की परिकल्पना पशुचिकित्सा के बिना संभव नहीं है क्योकि मनुष्य में लगभग तीन चौथाई से अधिक संक्रामक बीमारियां पशु जनित होती है। प्रो. गहलोत ने बताया कि एकल स्वास्थ्य की परिकल्पना को साकार रूप देने एवं नवीन जनित बीमारियों की रोकथाम में पशु चिकित्सक की भूमिका अग्रणी हैं। भारत की अर्थव्यवस्था में पशुधन का अमूल्य योगदान है। भारतीय पशु उत्पादों का विश्व में सर्वोच्च स्थान है जो की पशुचिकित्सकों की खाद्यय सुरक्षा में विशिष्ट महत्व सूचित करता है। कुलगुरु राजुवास, बीकानेर डॉ. सुमंत व्यास ने इस अवसर पर सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं पशु चिकित्सा से जुड़े सभी कर्मचारियों को बधाई संदेश दिया और कहा की पशुचिकित्सा एक बहु आयामी पेशा है जो कि पशु एवं मानव स्वास्थ्य के अतिरिक्त प्राकृतिक संतुलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होने बताया कि पशुचिकित्सकों का दायित्व केवल पशुओं के ईलाज तक ही सीमित नहीं है अपितु इसका पशु उत्पादन में भी वृहद योगदान है। देश आज पशु उत्पादों के उत्पादन में अग्रणी है। राजस्थान में भौगोलिक विषमता होते हुए भी किसानों में आत्महत्या दर शून्य है क्योकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पशुधन खेती के साथ–साथ महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि हमें अलग–अलग इकाइयों की तरह कार्य न करते हुए एकल संस्था की तरह भूमिका निभानी चाहिए ताकि पशु एवं मानव स्वास्थ्य, खाद्यान्न एवं पारिस्थितिकी संतुलित बना रह सके। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष वेटरनरी गायनेकोलॉजी, वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. पी.के. पारीक ने महाविद्यालय के इतिहास का वर्णन करते हुए पशु चिकित्सक की समाज में भूमिका पर अपने अनुभव साझा किए। अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने कार्यक्रम के प्रारम्भ में स्वागत भाषण देते हुए इस दिन के महत्व को बताते हुए सभी को शुभकामनाएं दी। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि आज विश्व पारिस्थितिकीय असंतुलन, जलवायु परिवर्तन, खाद्यय असुरक्षा एवं नई बीमारियों से ग्रसित हो रहा है तब पशु चिकित्सक की भूमिका अतिमहत्वपूर्ण हो जाती है। ग्रामीण अंचल की अर्थव्यवस्था मजबूत करने में पशु चिकित्सक का महत्वपूर्ण योगदान है। इस अवसर पर डॉ. अशोक गौड़ द्वारा इस वर्ष के विश्व पशुचिकित्सा दिवस–2026 की थीम "पशु चिकित्सक : भोजन और स्वास्थ्य के संरक्षक" पर पावर पॉईट प्रजेन्टेशन दिया। कार्यक्रम के दौरान मंच का संचालन डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा ने किया।

केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान (आई.सी.ए.आर.) की अनुसंधान समीक्षा बैठक कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास की अध्यक्षता में आयोजित

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के केंद्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान (इज्जतनगर), बरेली की अनुसंधान समीक्षा बैठक, राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस समीक्षा बैठक में केंद्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान की वर्तमान अनुसंधान प्रगति पर चर्चा एवं विभिन्न परियोजनाओं की समीक्षा की गई एवं भविष्य में संचालन की जाने वाली संभावित अनुसंधान संभावनाओं पर विस्तृत मंथन हुआ। इस बैठक में डॉ. बी. एकम्बरम (हैदराबाद), डॉ. सतपाल दहिया (हिसार), डॉ. मुकुन्द कदम्ब (नागपुर), डॉ. शिरीश निगम (मुम्बई) एवं डॉ. जयदीप रोकड़े (इज्जतनगर) एवं संस्थान के वैज्ञानिक एवं अधिकारी सम्मिलित रहे।

जयपुर में ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट–2026 (ग्राम) का भव्य आयोजन 23–25 मई को

राज्य सरकार द्वारा किसानों और पशुपालकों को आत्मनिर्भर, समृद्ध और आधुनिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में 'ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट–2026'(ग्राम) का भव्य आयोजन 23 से 25 मई, 2026 तक किया जा रहा है। इस राज्य स्तरीय मेगा मीट में देश–विदेश के प्रख्यात कृषि वैज्ञानिक, नवाचार विशेषज्ञ, तकनीकी जानकार और उद्योग प्रतिनिधि भाग लेकर आधुनिक खेती, जल प्रबंधन, फसल विविधीकरण, जैविक खेती, स्मार्ट एग्रीकल्चर, ड्रोन तकनीक, एग्री–स्टार्टअप्स और पशुपालन के उन्नत तरीकों पर अपने अनुभव और ज्ञान साझा करेंगे। किसानों और पशुपालकों को नई तकनीकों का प्रत्यक्ष प्रदर्शन देखने और उन्हें अपनाने का अवसर मिलेगा, जिससे उनकी आय बढ़ाने और उत्पादन क्षमता सुधारने में मदद मिलेगी। आप भी इस ऐतिहासिक आयोजन का हिस्सा बनें, नई तकनीकों को अपनाएं, अपने ज्ञान को बढ़ाएं और अपने कृषि एवं पशुपालन व्यवसाय को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएं। यही समय है आगे बढ़ने का, समृद्ध बनने का और एक नए कृषि युग का हिस्सा बनने का।

श्वानों एवं बिल्लियों में नि:शुल्क रेबीज रोधी टीकाकरण शिविर

विश्व पशुचिकित्सा दिवस–2026 के अवसर पर वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के क्लिनिक्स परिसर में शनिवार को श्वानों एवं बिल्लियों के लिए नि:शुल्क रेबीज वैक्सीनेशन शिविर का आयोजन किया गया। प्रो. प्रवीण बिश्नोई, निदेशक क्लिनिक्स, वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर ने बताया कि इस अवसर पर 42 श्वानों एवं बिल्लियों का टीकाकरण किया गया। शिविर का उद्घाटन अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने किया। इस दौरान सहायक आचार्य डॉ. सीताराम गुप्ता, डॉ. मनोहर सेन, डॉ. सुनीता चौधरी, डॉ. संध्या मौरवाल, डॉ. प्रियंका कडेला एवं विद्यार्थियों का सहयोग रहा।

नि:शुल्क पशुचिकित्सा शिविर का आयोजन

वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर एवं सप्त शक्ति कमान, संचालन एवं रसद शाखा, भारतीय सेना, जयपुर के संयुक्त तत्वाधान में 22 अप्रेल को सर्वोदय बस्ती में नि:शुल्क पशुचिकित्सा शिविर में पशुओं की स्वास्थ्य जांच, कृमिनाशन, लघु शल्य चिकित्सा एवं अन्य चिकित्सा सुवाधाऐं प्रदान की गई जिसमें गाय, भेड़, बकरी, बिल्ली सहित कुल 855 पशुओं को चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई। शिविर के आयोजन में कर्नल सैमुअल प्रेमकुमार, कमांड अधिकारी वनराज आर. एंड वी., एन.सी.सी., डॉ. अनिल बिश्नोई एवं डॉ. सुनिता चौधरी का सहयोग रहा।

विश्व पृथ्वी दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के पशु जैव विविधता संरक्षण केंद्र द्वारा 22 अप्रेल को विश्व पृथ्वी दिवस–2026 मनाया गया। इस वर्ष की थीम "प्लैनेट वर्सेस प्लास्टिक" के अनुसरण में केंद्र की प्रभारी डॉ. रजनी अरोड़ा ने पृथ्वी दिवस मनाने के उद्देश्य के बारे में बताते हुए कहा कि पृथ्वी को शुद्ध और सुरक्षित रखने का निरंतर प्रयास तथा प्रकृति और मानव के बीच का संतुलन ही हमारी आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित रख सकता है। डॉ. नरसी राम गुर्जर ने बताया कि हमें प्रकृति एवं जैव विविधता को बचाने के लिए प्लास्टिक के उपयोग पर निर्भरता न्यूनतम करनी होगी तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का ध्यान रखना होगा।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा दिनांक 4, 6 एवं 27 अप्रेल को गांव संगर, रतासर एवं दौलतपुरा गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 129 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 16 अप्रेल को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 18 अप्रेल को गांव जैतियावास में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 54 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा दिनांक 28 अप्रेल को गांव झाक में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 24 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 8 अप्रेल को केन्द्र परिसर में तथा 17 अप्रेल को गांव गठियागड़ा पालमांडव गांव में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 63 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा दिनांक 27 अप्रेल को गांव सिंद्रेथ में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 26 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ द्वारा 6, 13, 20, 24 एवं 27 अप्रेल को गांव भिंयासर, शिमला, अमरासर, खोपड़ा तथा जब्रासर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 117 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा 7 अप्रेल को केन्द्र परिसर में तथा 29 अप्रेल को गांव भिमली में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 45 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 17, 18 एवं 21–27 अप्रेल को केन्द्र परिसर में आयोजित कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 88 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

ग्रीष्म ऋतु में पशु आवास के भीतर सूक्ष्म वातावरण का प्रबधंन

सूक्ष्म वातावरण वह स्थानीय जलवायु है जो पशु के आसपास पशुशाला के भीतर मौजूद रहती है। इसमें कई प्रमुख पर्यावरणीय कारक शामिल होते हैं, जैसे तापमान, आर्द्रता, वायु प्रवाह, प्रकाश, गैसों की मात्रा, तथा फर्श और स्वच्छता की स्थिति। यदि इन सभी कारकों का संतुलन सही ढंग से बनाए रखा जाए तो पशु आरामदायक महसूस करते हैं और उनकी उत्पादकता भी बेहतर बनी रहती है। ग्रीष्म ऋतु में इन कारकों का संतुलन बिगड़ जाता है, जिससे पशुओं को अत्यधिक गर्मी का सामना करना पड़ता है। इसलिए पशुशाला के अंदर तापमान को कम करना और उचित वायु संचार बनाए रखना अत्यंत आवश्यक होता है।

ग्रीष्म ऋतु का पशुओं पर प्रभाव: गर्मी के मौसम में पशुओं पर कई प्रकार के नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलते हैं। गर्मी और नमी के कारण पशुशाला में मक्खियों और परजीवियों की संख्या बढ़ जाती है, जिससे कई प्रकार के रोग फैल सकते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में पशुशाला का उचित प्रबंधन

पशुशाला की संरचना: गर्मी के मौसम में पशुशाला की संरचना ऐसी होनी चाहिए जिससे अधिकतम वायु प्रवाह और छाया उपलब्ध हो सके।

- ❖ पशुशाला की छत ऊँची होनी चाहिए। छत पर थैचिंग (घास या पुआल की परत) या फॉल्स सीलिंग का उपयोग किया जा सकता है।
- ❖ पशुशाला को पूर्व–पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए ताकि सीधी धूप कम लगे। इससे पशुशाला के अंदर तापमान अपेक्षाकृत कम बना रहता है।

छाया की व्यवस्था: ग्रीष्म ऋतु में पशुओं को सीधी धूप से बचाना अत्यंत आवश्यक होता है।

- ❖ पशुशाला के आस–पास छायादार पेड़ लगाए जा सकते हैं।
- ❖ खुले स्थानों में शेड या टीन की छत बनाई जा सकती है। छाया पशुओं को गर्मी से राहत प्रदान करती है।

उचित वायु संचार एवं पर्याप्त पानी : गर्मी के मौसम में पशुशाला में अच्छा वेंटिलेशन होना बहुत जरूरी है। गर्मी के मौसम में पशुओं को अधिक पानी की आवश्यकता होती है।

- ❖ पशुओं को दिन में कई बार स्वच्छ और ठंडा पानी उपलब्ध कराना चाहिए।
- ❖ पानी के टैंकों को साफ रखना चाहिए।
- ❖ पर्याप्त पानी पशुओं को हीट स्ट्रेस से बचाने में मदद करता है। कमजोर और बीमार पशुओं को अलग रखें।

फर्श और स्वच्छता: गर्मी के मौसम में पशुशाला की स्वच्छता बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है।

- ❖ गोबर और कचरे को नियमित रूप से हटाना चाहिए।
- ❖ पशुशाला को दिन में कम से कम दो बार साफ करना चाहिए।
- ❖ फर्श को सूखा और साफ रखना चाहिए। इससे रोगों का खतरा कम हो जाता है।

ग्रीष्म ऋतु में पोषण प्रबंधन: गर्मी के मौसम में पशुओं के आहार प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। खनिज सही मात्रा में मिलाना चाहिए। इससे शरीर में खनिजों का संतुलन बना रहता है।

निष्कर्ष: ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक तापमान और आर्द्रता पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादन पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। इसलिए पशुशाला के भीतर उचित सूक्ष्म वातावरण बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। उचित पशुशाला संरचना, छाया की व्यवस्था, अच्छा वेंटिलेशन, स्वच्छता, संतुलित आहार तथा पर्याप्त पानी उपलब्ध कराकर पशुओं को हीट स्ट्रेस से बचाया जा सकता है। यदि पशुपालक वैज्ञानिक तरीकों से पशु प्रबंधन अपनाएँ तो गर्मी के मौसम में भी पशुओं की उत्पादकता और स्वास्थ्य को बनाए रखा जा सकता है। इस प्रकार उचित सूक्ष्म वातावरण प्रबंधन पशुपालन को अधिक लाभदायक और टिकाऊ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

डॉ. मुकेश चन्द शर्मा
प्रभारी, पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

सफलता की कहानी

एक भैंस से शुरूआत कर बनी सफल महिला पशुपालक व्यवसायी

डूंगरपुर जिले के फलोज गांव की निवासी प्रगतिशील पशुपालक श्रीमती ललिता पाटीदार, धर्मपत्नी श्री महेन्द्र पाटीदार, सीमित शैक्षणिक पृष्ठभूमि (कक्षा 8वीं पास) के बावजूद मेहनत, लगन और सही मार्गदर्शन से आत्मनिर्भरता की मिसाल बनकर उभरी हैं। उन्होंने पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों से तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त कर स्वरोजगार की दिशा में कदम बढ़ाया और पशुपालन व्यवसाय प्रारंभ किया। शुरुआत में श्रीमती ललिता पाटीदार ने केवल एक मुर्रा भैंस खरीदकर भैंस पालन कार्य की शुरुआत की। सीमित संसाधनों से शुरू किया गया यह छोटा प्रयास आज निरंतर परिश्रम, उचित प्रबंधन, संतुलित आहार, स्वास्थ्य देखभाल तथा विशेषज्ञ सलाह के कारण एक सफल डेयरी इकाई के रूप में विकसित हो चुका है। वर्तमान में उनके पास कुल 16 भैंसें हैं, जिनमें से 4 भैंसें दुग्ध उत्पादन कर रही हैं। इनसे प्रतिदिन लगभग 30 लीटर दूध का उत्पादन हो रहा है, जिसे बेचकर उन्हें नियमित आय प्राप्त होती है। इस व्यवसाय से श्रीमती पाटीदार को प्रतिमाह लगभग ₹32,400 तथा प्रतिवर्ष लगभग ₹3,88,800 की आय प्राप्त हो रही है। यह आय न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत कर रही है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी और आत्मनिर्भरता का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर रही है। पशुपालन से प्राप्त गोबर एवं जैविक खाद का उपयोग वे अपनी कृषि भूमि में करती हैं, जिससे रासायनिक उर्वरकों पर खर्च कम हुआ है और फसल उत्पादन में भी सुधार हुआ है। इस प्रकार पशुपालन और कृषि का समन्वित मॉडल अपनाकर उन्होंने दोहरे लाभ का सफल उदाहरण स्थापित किया है। आज श्रीमती ललिता पाटीदार अपने गांव एवं आसपास के क्षेत्रों में एक सफल महिला उद्यमी, प्रगतिशील पशुपालक और प्रेरणास्रोत के रूप में जानी जाती हैं। उनकी सफलता यह सिद्ध करती है कि यदि ग्रामीण महिलाएं उचित प्रशिक्षण, वैज्ञानिक सलाह और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें, तो वे आर्थिक सशक्तिकरण की नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकती हैं। श्रीमती पाटीदार अपनी इस सफलता का श्रेय पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों, चिकित्सकों और विशेषज्ञों को देती हैं, जिनके मार्गदर्शन ने उनके जीवन को नई दिशा प्रदान की।

सम्पर्क: श्रीमती ललिता पाटीदार, पत्नी श्री महेन्द्र जी पाटीदार
गांव फलोज, तहसील डूंगरपुर, राजस्थान (मो. : 9660364560)

बकरियों में पी.पी.आर. रोग

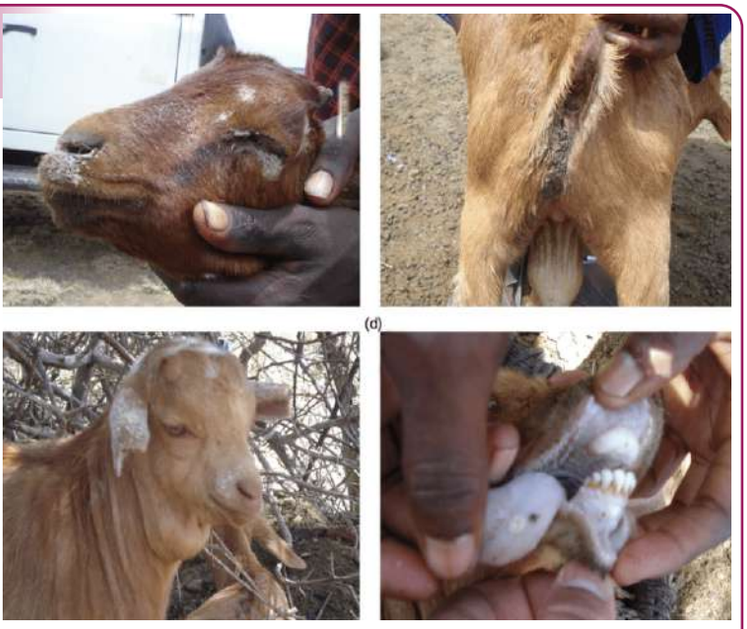

भारत के कृषि आर्थिकी में पशुपालन का विशेष योगदान है क्योंकि पशुपालन व्यवसाय में ग्रामीणों की समाजिक एवं आर्थिक स्थिति को मजबूत करने की अद्भुत क्षमता है। पशुपालन के अन्तर्गत बकरी पालन का अपना एक अहम महत्त्व है क्योंकि इनमें मौसम के अनुकूल अपने को ढालने एवं अच्छी उत्पादन देने की क्षमता होती है। बकरियों से हमें मांस, दुग्ध, ऊन, चमड़ा के साथ–साथ खेती के लिए खाद की प्राप्ति भी होती है। बकरी पालन प्रायः लघु, सीमान्त तथा भूमिहीन किसानों का एक महत्तवपूर्ण एवं लाभप्रद व्यवसाय है जिसे अपेक्षाकृत कम निवेश के साथ शुरु किया जा सकता है। बकरी पालन को सीमित पशु आवास–व्यवस्था में, कम लागत के साथ अपेक्षाकृत कम प्रबन्धन तथा कम जोखिम वाले उद्यम के तौर पर शुरू किये जा सकने के कारण महात्मा गाँधी ने बकरी को 'गरीब की गाय' की संज्ञा दी थी। इनमें गर्भकाल (145–155 दिन) छोटा होता है जिससे वर्ष में दो या दो से अधिक बच्चे पैदा होते हैं। बकरी का दूध सुपाच्य एवं गुणकारी होता है। बकरियों में दाने पर खर्च कम आता है क्योंकि ज्यादातर समय हरे घास को चर कर अपनी आवश्यक्ता की पूर्ति करती हैं । बकरी के दुग्ध में मैग्नीशियम, कैल्शियम, फॉसफोरस की प्रचुरता, कोलेस्ट्रॉल, लेक्टोज तथा केसीन की कमी और छोटे फैट ग्लोब्यूल्स के कारण हृदय, हड्डियों एवं पाचन की दृश्टि से अत्यन्त लाभकारी होता है। पशुपालक भाई उचित प्रबन्धन जैसे नियमित बाड़े की साफ–सफाई, चारे व दाने की उचित मात्रा, समय–समय पर दवापान एवं टीकाकरण आदि अपनाकर अधिक उत्पादन ले सकते है। बकरियों में प्रायः होने वाले प्रमुख रोग है :– पी.पी.आर. (पेस्टी डीस पेटिट्स रुमीनेन्ट) रोग, गर्भपात (ब्रूसेलोसिस), गलघोंटू, आन्त्र विशाक्तता, खुरपका एवं मुँहपका रोग, आन्तरिक एवं बाह्य परजीवी जनित रोग आदि।

पी.पी.आर.: पेस्ट डे पेटिट्स रुमिनेंट्स, जिसे आमतौर पर प्लेग रोग कहा जाता है, एक अत्यधिक संक्रामक वायरल रोग है जो मुख्य रूप से बकरियों और भेड़ों को प्रभावित करता है। इसके मुख्य लक्षण उच्च बुखार, श्वसन संकट, मुंह में घाव, दस्त और उच्च मृत्यु दर हैं। यह रोग उत्पादकता में कमी और व्यापार प्रतिबंधों के कारण छोटे रूमिनेंट उत्पादन में प्रमुख आर्थिक नुकसान पहुंचाता है। यह रोग एक विषाणु (मोरबिली विषाणु) जनित रोग है। भेड़ की तुलना में बकरी में पी.पी.आर. रोग अधिक होता है। यह रोग सभी उम्र व लिंग की भेड़ बकरियों को प्रभावित करता है लेकिन मेमनों में मृत्युदर बहुत अधिक होती है। यह रोग पशुओं में बहुत तेजी से फैलता है और इस रोग से पशु की मृत्यु बहुत तेजी से होती है, इसलिए इसे प्लेग के नाम से भी जानते हैं। यह रोग बीमार बकरियों के सीधे संपर्क में आने से, नासिका स्राव, लार और मल जैसी स्रावों के माध्यम से तेजी से फैलता है। इस संक्रमण के प्रति तीन से बारह महीने की उम्र के बकरियाँ विशेष रूप से संवेदनशील होती हैं। इस रोग में अधिक मृत्युदर होने की वजह से पशुपालकों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इस रोग में पशु को तेज बुखार आता है, जो चार से पांच दिनों तक रहता है। पशु खाना–पीना तथा चलना–फिरना बंद कर देता है। त्वचा रूखी हो जाती है। रोगी पशु के मुंह, होंठ व जीभ पर छाले हो जाते हैं जिसकी वजह से पशु के मुंह से लार गिरती है। रोगी पशु के मुंह व होंठ में सूजन आ जाती है जिससे पशु को सांस लेने में तकलीफ होती है। आंखों से पानी आता है तथा लगातार दस्त लगते हैं, जिससे पशु के शरीर में पानी की कमी हो जाती है। पशु की नाक से लगातार स्राव होता है जो शुरू में पानी जैसा होता है तथा बाद में गाढ़ा हो जाता है। गाभिन पशु को गर्भपात भी हो सकता है। दस्त एवं निमोनिया के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं। समय पर उचित ईलाज न करवाने पर पशु की एक सप्ताह के भीतर मृत्यु भी हो सकती है।

रोग से बचाव के उपायः सर्वप्रथम इस रोग से बचाव के लिए अपने पशुओं को स्वच्छ वातावरण में रखें व उचित पोषण दें एवं सही देखभाल करें। रोगी पशु को तुरन्त स्वस्थ पशु से अलग कर देना चाहिए जिससे यह रोग स्वस्थ पशु में न फैल सके। पशु चिकित्सक से परामर्श लेकर रोगी पशु को उचित औषधी देनी चाहिए। इस रोग से बचाव के लिए टीके अवश्य लगवाने चाहिए। दो माह की उम्र के पश्चात यह टीके लगवाएं जा सकते हैं। फिर बूस्टर डोज दो सप्ताह बाद अवश्य लगवायें। एक बार इस रोग का टीका लगवाने के बाद तीन साल तक इस रोग से बचाव होता है यानी तीन साल बाद ही टीके की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, सही जैव–सुरक्षा उपाय जैसे संक्रमित जानवरों को अलग करना, हाल ही में खरीदे गए बकरियों को कम से कम दो से तीन सप्ताह के लिए क्वारंटाइन करना, और प्रकोप के समय जानवरों की आवाजाही को सीमित करना, रोग के फैलाव को रोकने में मदद करते हैं।

डॉ. नवल किशोर सिंह एवं डॉ. हिमानी शर्मा
उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, मंडी, हिमाचल प्रदेश

थैलेरियोसिसः पशुओं में परजीवी जनित रोग

थैलेरियोसिस एक अत्यंत गम्भीर परजीवी जनित रोग है, जो पशुओं के स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालता है। इस रोग की प्रमुख पहचान तेज बुखार के साथ–साथ लिम्फ नोड्स में सूजन के रूप में होती है, जिससे पशु कमजोर और सुस्त दिखाई देने लगता है। कम उम्र के बछड़े विशेष रूप से इस रोग के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं, क्योंकि उनकी रोग–प्रतिरोधक क्षमता पूर्ण रूप से विकसित नहीं होती। इसके अलावा संकर नस्ल के पशुओं में भी यह रोग अधिक तीव्रता से प्रभाव दिखाता है, जिससे उत्पादन और स्वास्थ्य दोनों प्रभावित होते हैं। यह रोग मुख्य रूप से गाय और भैंस में थेलेरिया एनूलाटा नामक रक्त परजीवी के कारण उत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त बकरी, घोड़े तथा अन्य पशुओं में भी थेलेरिया की भिन्न–भिन्न प्रजातियों द्वारा संक्रमण देखा जाता है। विदेशी (संकर) नस्ल के पशुओं में इस रोग की तीव्रता देशी नस्लों की तुलना में अधिक होती है।

रोग का प्रसारः

यह रोग मुख्य रूप से खून चूसने वाली किलनियां के माध्यम से गाय, भैंस, बकरी और घोड़े जैसे पशुओं में फैलता है। जब कोई किलनी पहले से थेलेरिया परजीवी से संक्रमित पशु का रक्त चूसती है तो यह परजीवी उसके शरीर में प्रवेश कर जाता है और वंही विकसित होने लगता है। बाद में यही संक्रमित किलनी अपनी विभिन्न अवस्थाओं जैसे लार्वा और निम्फ के रूप में जब किसी स्वस्थ पशु का रक्त चूसती है तब यह परजीवी उस पशु के रक्त में स्थानान्तरित हो जाता है। इस प्रकार किलनियां रोग के वाहक (वेक्टर) के रूप में कार्य करती है और एक संक्रमित पशु से दूसरे स्वस्थ पशु तक इस रोग को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

रोग के लक्षणः

- इस रोग से प्रभावित पशुओं में लगातार तेज बुखार बना रहता है जो लम्बे समय तक कम नहीं होता। इसके साथ ही कंधे के पास स्थित लसिका ग्रंथियां (लिम्फ नोड्स) में स्पष्ट सूजन दिखाई देती है जो आकार में बढ़कर आसानी से महसूस की जा सकती हैं। यह इस रोग का एक प्रमुख और पहचान योग्य लक्षण है।
- इसके अलावा संक्रमित पशु में खून की कमी (एनीमिया) विकसित हो जाती है जिससे शरीर अत्यधिक कमजोर और सुस्त हो जाता है।
- पशु की भूख कम हो जाती है या वह पूरी तरह से आहार लेना बंद कर देता है।
- दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन में गिरावट आ जाती है जिससे आर्थिक नुकसान भी होता है।
- यदि समय पर उचित उपचार नहीं किया जाए तो रोग की स्थिति तेजी से बिगड़ सकती है और अंततः पशु की मृत्यु भी हो सकती है।
- कुछ मामलों में संक्रमित पशुओं को खूनी दस्त की समस्या भी हो सकती है जो स्थिति को और गंभीर बना देती है।

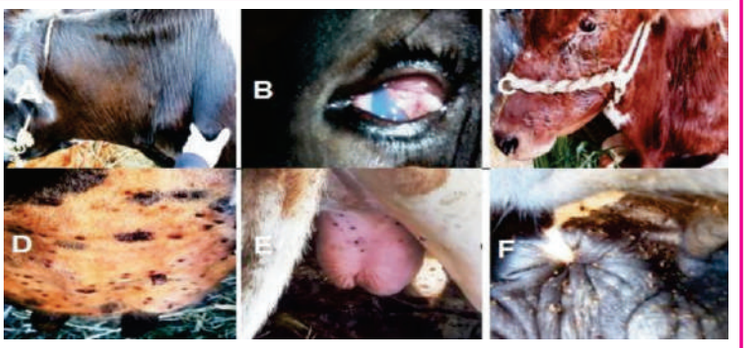

रोग का उपचारः

- थेलेरियोसिस रोग के उपचार के लिए प्रायः बुपारवाकियोन औषधि का उपयोग किया जाता है जिसे पशु के शरीर के भार के अनुसार लगभग 1 मि.ली प्रति 20 किलोग्राम की दर से दिया जाता है। यह दवा इस रोग के लिए प्रभावी मानी जाती है और समय पर उपयोग करने से अच्छे परिणाम मिलते हैं।
- यदि किसी कारणवश बुपारवाकियोन उपलब्ध न हो तो वैकल्पिक रूप में ऑक्सीटेट्रासाइक्लिन तथा डाइमीनाजीन एसीचुरेट औषधि का संयुक्त रूप से 2–3 दिनों तक उपयोग किया जा सकता है।
- कुछ गंभीर मामलों में रोगग्रस्त पशु के रक्त में हीमोग्लोबिन का स्तर अत्यधिक कम हो जाता है जिससे उसकी स्थिति और अधिक चिंताजनक हो सकती है। ऐसी अवस्था में मुख्य उपचार के साथ–साथ किसी स्वस्थ पशु से रक्त चढ़ाना जीवन रक्षक सिद्ध हो सकता है।
- पशु में खून की कमी को दूर करने के लिए हिमेटिनिक औषधियों का उपयोग करना भी आवश्यक होता है ताकि पशु की कमजोरी कम हो और उसकी सामान्य स्थिति में शीघ्र सुधार हो सके।

रोग से बचावः

- इस रोग की रोकथाम के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपाय किलनी के नियंत्रण पर ध्यान देना है,क्योंकि यही इस रोग के मुख्य वाहक होते है।
- पशुओं के शरीर, रहने के स्थान तथा आसपास के वातावरण को साफ–सुथरा रखना चाहिए और समय–समय पर उपयुक्त कीटनाशकों का उपयोग कर किलनियों को नष्ट करना चाहिए। नियमित रूप से पशुओं की जांच कराना भी आवश्यक है, ताकि किलनियों का संक्रमण प्रारम्भिक अवस्था में ही रोका जा सके।
- इसके अतिरिक्त इस रोग से बचाव के लिए वैक्सीनेशन एक प्रभावी उपाय है। रक्षा–टी वैक्सीन का उपयोग कर पशुओं को इस रोग के प्रति प्रतिरोधक क्षमता प्रदान की जा सकती हैं विशेष रूप से संवेदनशील एवं संकर नस्ल के पशुओं में समय पर टीकाकरण करना अत्यंत आवश्यक होता है जिससे रोग के प्रकोप और उससे होने वाले नुकसान को काफी हद तक कम किया जा सके।

डॉ. दीपिका धूड़िया
वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

डेयरी फार्म प्रबंधन में डिजिटल अभिलेख संधारण एवं मोबाइल अनुप्रयोगों की भूमिका

भारत विश्व के प्रमुख दुग्ध उत्पादक देशों में से एक है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में डेयरी उद्योग का महत्वपूर्ण योगदान है। आज के समय में पशुपालन केवल पारंपरिक अनुभव पर आधारित कार्य नहीं रह गया है, बल्कि इसमें वैज्ञानिक प्रबंधन और आधुनिक तकनीकों का उपयोग अत्यंत आवश्यक हो गया है। बदलते समय के साथ–साथ डेयरी प्रबंधन में भी डिजिटल तकनीकों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। स्मार्टफोन और इंटरनेट की उपलब्धता ने पशुपालकों के लिए अनेक नई संभावनाएँ खोल दी हैं। मोबाइल ऐप्स और डिजिटल रिकॉर्ड कीपिंग (मोबाइल अनुप्रयोगों और डिजिटल अभिलेख संधारण) की सहायता से पशुपालक अपने पशुओं की पूरी जानकारी व्यवस्थित रूप से सुरक्षित रख सकते हैं। इससे न केवल फार्म प्रबंधन आसान होता है, बल्कि दूध उत्पादन, पशु स्वास्थ्य और आर्थिक लाभ में भी सुधार होता है।

डिजिटल अभिलेख संधारण क्या है :– डिजिटल अभिलेख संधारण का अर्थ है कि पशुओं से संबंधित सभी महत्वपूर्ण जानकारी को कागज के बजाय मोबाइल फोन, कंप्यूटर या अन्य डिजिटल माध्यमों में सुरक्षित रखना। डेयरी फार्म में कई प्रकार की जानकारी नियमित रूप से दर्ज करनी होती है, जैसे :–

- पशु की पहचान और नस्ल
- दूध उत्पादन का दैनिक रिकॉर्ड
- टीकाकरण और दवा संबंधी जानकारी
- प्रजनन से संबंधित विवरण
- चारे और पोषण से संबंधित जानकारी

पारंपरिक रूप से ये सभी विवरण रजिस्टर या डायरी में लिखे जाते थे, लेकिन कागजी रिकॉर्ड (लिखित अभिलेख) कई बार खो जाते हैं, खराब हो जाते हैं या समय पर उपलब्ध नहीं होते। डिजिटल रिकॉर्ड कीपिंग इन समस्याओं को काफी हद तक समाप्त कर देती है।

डेयरी फार्म में मोबाइल अनुप्रयोगों का उपयोग :– आजकल कई ऐसे मोबाइल अनुप्रयोग उपलब्ध हैं जो पशुपालकों को डेयरी प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। इन अनुप्रयोगों के माध्यम से पशुपालक अपने पशुओं का रिकॉर्ड रख सकते हैं, पशु रोगों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और वैज्ञानिक पशुपालन के बारे में सीख सकते हैं। उदाहरण के रूप में e-Gopala] Pashu Poshan और NDDB Dairy Services App जैसे ऐप्स पशुपालकों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। ये ऐप्स पशु स्वास्थ्य, पोषण, प्रजनन और डेयरी प्रबंधन से संबंधित उपयोगी जानकारी प्रदान करते हैं। इन ऐप्स के माध्यम से पशुपालक अपने पशुओं का डिजिटल रिकॉर्ड तैयार कर सकते हैं और समय–समय पर आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

डेयरी फार्म में डिजिटल अभिलेख संधारण के प्रमुख लाभ :–

दूध उत्पादन का सटीक रिकॉर्ड : डिजिटल रिकॉर्ड की सहायता से प्रत्येक पशु के दैनिक दूध उत्पादन का रिकॉर्ड आसानी से रखा जा सकता है। इससे यह पता चलता है कि कौन–सा पशु अधिक दूध दे रहा है और किस पशु की उत्पादन क्षमता कम हो रही है। इस जानकारी के आधार पर पशुपालक पशुओं के पोषण और प्रबंधन में आवश्यक सुधार कर सकते हैं।

पशु स्वास्थ्य प्रबंधन में सुधार : डिजिटल रिकॉर्ड रखने से पशुओं के टीकाकरण, दवा और उपचार से संबंधित जानकारी सुरक्षित रहती है। इससे पशुपालक समय पर टीकाकरण कर सकते हैं और कई संक्रामक रोगों से अपने पशुओं को बचा सकते हैं। यदि किसी पशु को पहले कोई बीमारी हुई हो, तो उसका रिकॉर्ड भी आसानी से देखा जा सकता है, जिससे उपचार करने में सुविधा होती है।

प्रजनन प्रबंधन में सुविधा : डेयरी फार्म में प्रजनन प्रबंधन का बहुत महत्व होता है। पशु के हीट पीरियड, कृत्रिम गर्भाधान और बछड़े के जन्म से संबंधित जानकारी को याद रखना कई बार कठिन होता है। मोबाइल ऐप्स के माध्यम से यह जानकारी सुरक्षित रहती है और समय आने पर पशुपालक को सूचना भी मिल सकती है। इससे प्रजनन प्रबंधन अधिक वैज्ञानिक और प्रभावी बनता है।

आर्थिक प्रबंधन में सहायता : डिजिटल रिकॉर्ड की सहायता से पशुपालक दूध उत्पादन, चारे की लागत, दवाइयों का खर्च और अन्य खर्चों का सही हिसाब रख सकते हैं। इससे यह समझना आसान हो जाता है कि डेयरी फार्म से कितना लाभ या हानि हो रही है। सही आर्थिक प्रबंधन से पशुपालक अपने फार्म को अधिक लाभदायक बना सकते हैं।

समय और श्रम की बचत : डिजिटल रिकॉर्ड रखने से जानकारी को ढूंढने में कम समय लगता है। सभी जानकारी एक ही स्थान पर सुरक्षित रहती है, जिससे फार्म प्रबंधन अधिक व्यवस्थित हो जाता है। इसके अलावा मोबाइल ऐप्स के माध्यम से पशुपालक कई प्रकार की सलाह और जानकारी भी तुरंत प्राप्त कर सकते हैं।

डेयरी प्रबंधन में डिजिटल तकनीक का महत्व : डिजिटल तकनीक केवल रिकॉर्ड रखने तक सीमित नहीं है। आजकल कई उन्नत डेयरी फार्मों में सेंसर, ऑटोमैटिक मिल्किंग सिस्टम और स्मार्ट उपकरणों का उपयोग भी किया जा रहा है। इन तकनीकों के माध्यम से पशुओं के स्वास्थ्य, गतिविधि और दूध उत्पादन पर लगातार नजर रखी जा सकती है। हालांकि छोटे और मध्यम स्तर के पशुपालकों के लिए मोबाइल ऐप्स और डिजिटल रिकॉर्ड कीपिंग सबसे आसान और सुलभ विकल्प है।

डेयरी फार्म में डिजिटल तकनीक अपनाने के लिए आवश्यक कदमः आधुनिक समय में डेयरी फार्मिंग को अधिक लाभकारी और वैज्ञानिक बनाने के लिए डिजिटल तकनीकों का उपयोग अत्यंत आवश्यक हो गया है। डिजिटल साधनों के माध्यम से फार्म प्रबंधन अधिक सटीक, तेज और व्यवस्थित बनता है। पशुपालकों को डिजिटल तकनीक का अधिकतम लाभ उठाने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना चाहिए,

- जागरूकता और प्रशिक्षण :– पशुपालकों को डिजिटल तकनीकों के लाभ और उपयोग के बारे में जानकारी देना आवश्यक है। इसके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएं और जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए।
- स्मार्टफोन और इंटरनेट की उपलब्धता और उपयोग सीखना :– डिजिटल तकनीक के उपयोग के लिए स्मार्टफोन और इंटरनेट कनेक्टिविटी आवश्यक है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी उपलब्धता सुनिश्चित करना जरूरी है।
- उपयुक्त मोबाइल ऐप्स का चयन :– पशुपालकों को अपनी आवश्यकता के अनुसार सही मोबाइल ऐप्स का चयन करना चाहिए। जैसेरू दुग्ध रिकॉर्ड, स्वास्थ्य निगरानी, टीकाकरण रिमाइंडर आदि।
- डेटा का नियमित अपडेट :– डिजिटल रिकॉर्ड तभी उपयोगी होता है जब पशुओं से संबंधित जानकारी नियमित रूप से दर्ज हो, रोजाना या साप्ताहिक डेटा एंट्री करें।
- सरकारी योजनाओं का लाभ उठाना :– विश्वसनीय और सरकारी संस्थानों द्वारा विकसित मोबाइल ऐप्स का उपयोग करना। पशु चिकित्सकों और कृषि विश्वविद्यालयों से मार्गदर्शन प्राप्त करना।
- धीरे–धीरे तकनीक अपनाना :– एक साथ सब कुछ बदलने के बजाय धीरे–धीरे डिजिटल तकनीकों को अपनाना चाहिए। इससे समझ और उपयोग दोनों आसान हो जाते हैं।

यदि इन बातों का पालन किया जाए तो डेयरी फार्म का प्रबंधन अधिक प्रभावी और लाभदायक बनाया जा सकता है।

निष्कर्षः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट है कि डिजिटल तकनीक, विशेष रूप से डिजिटल अभिलेख संधारण एवं मोबाइल ऐप्स, आधुनिक पशुपालन और डेयरी प्रबंधन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। इन तकनीकों के माध्यम से पशुपालक अपने फार्म का प्रबंधन अधिक वैज्ञानिक, व्यवस्थित एवं प्रभावी ढंग से कर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप पशुओं के स्वास्थ्य, दुग्ध उत्पादन तथा आर्थिक लाभ में उल्लेखनीय सुधार संभव है। यद्यपि ग्रामीण क्षेत्रों में इन तकनीकों के व्यापक उपयोग के लिए जागरूकता एवं संसाधनों की आवश्यकता है, फिर भी इनका अपनाया जाना पशुपालन को अधिक संगठित, लाभकारी और टिकाऊ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। भविष्य में डिजिटल तकनीक और सूचना प्रौद्योगिकी डेयरी क्षेत्र के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए पशुपालकों की आय वृद्धि में सहायक सिद्ध होंगी।

''डिजिटल तकनीक अपनाएं, पशुपालन को स्मार्ट बनाएं''

डॉ. संध्या मोरवाल
सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

ग्रीष्मकाल में पशुओं का चारा प्रबंधन

राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र में ग्रीष्मकाल अत्यंत कठोर एवं चुनौतीपूर्ण होता है। उच्च तापमान, तीव्र सौर विकिरण, गर्म हवाएँ (लू) तथा सीमित हरित वनस्पति के कारण यह अवधि पशुपालन के लिए संवेदनशील मानी जाती है। इस दौरान न केवल प्राकृतिक चारे की उपलब्धता घट जाती है, बल्कि जल संसाधनों की कमी भी पशुओं के स्वास्थ्य एवं उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। अतः इस समय वैज्ञानिक एवं योजनाबद्ध चारा प्रबंधन अपनाना अत्यंत आवश्यक है। ग्रीष्मकाल में प्राकृतिक चारे की स्थिति कमजोर हो जाती है। उपलब्ध चारे व वनस्पति प्रायः सूखी, रेशेदार एवं कम पोषक तत्वों वाली होती है, जिससे पशुओं की ऊर्जा एवं प्रोटीन आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पातीं। इस स्थिति में चारा उपलब्ध कराने के समय का उचित निर्धारण अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। प्रातःकाल सूर्योदय के समय तथा सायंकाल सूर्यास्त के पश्चात पशुओं को चारा देना या चरने हेतु भेजना सर्वोत्तम रहता है, क्योंकि इन समयों में तापमान अपेक्षाकृत कम होता है। इसके विपरीत दोपहर के समय जब तापमान अपने चरम पर होता है, पशुओं को छायादार स्थानों पर विश्राम देना आवश्यक है, जिससे वे तापीय तनाव से सुरक्षित रह सकें। चारा प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि पशुओं को अत्यधिक दूरी तक चारा खोजने के लिए न ले जाया जाए, विशेषकर तब जब जल स्रोत सीमित या दूरस्थ हों। लंबी दूरी तय करने से पशुओं की ऊर्जा व्यर्थ होती है, थकान बढ़ती है तथा निर्जलीकरण का खतरा उत्पन्न होता है। अतः ऐसे स्थानों का चयन किया जाना चाहिए जहाँ चारा, जल एवं छाया की समुचित व्यवस्था उपलब्ध हो। जहाँ प्राकृतिक छाया उपलब्ध न हो वहाँ कृत्रिम छाया (जैसे शेड) की व्यवस्था करना लाभकारी सिद्ध हो सकता है। जल प्रबंधन ग्रीष्मकालीन चारा प्रबंधन का केंद्रीय घटक है। इस मौसम में पशुओं को बार–बार स्वच्छ एवं ठंडा पानी उपलब्ध कराना अनिवार्य होता है। नियमित अंतराल पर पानी पिलाने से पशुओं की शारीरिक क्रियाएँ संतुलित रहती हैं, चारा ग्रहण क्षमता बढ़ती है तथा उनकी उत्पादकता में सुधार होता है। जल की अनुपलब्धता से पशुओं में तनाव, कमजोरी एवं रोगों की संभावना बढ़ जाती है, इसलिए वैकल्पिक जल स्रोतों की व्यवस्था करना भी आवश्यक है। प्राकृतिक चारे की कमी को देखते हुए पूरक आहार का प्रावधान करना अत्यंत आवश्यक है। इसमें सूखा चारा (जैसे भूसा), सीमित मात्रा में उपलब्ध हरा चारा, खनिज मिश्रण तथा आवश्यकतानुसार सांद्र आहार शामिल किया जा सकता है। संतुलित पूरक आहार पशुओं की पोषण आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक होता है, जिससे उनका स्वास्थ्य एवं उत्पादकता दोनों सुरक्षित रहते हैं। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों ने इस समस्या को और अधिक गंभीर बना दिया है। चारे की कमी, वर्षा में अनियमितता तथा बढ़ते तापमान पारंपरिक पशुपालन प्रणाली के लिए चुनौती बन रहे हैं। ऐसे में सतत चारा प्रबंधन चारागाह विकास, सूखा–सहनशील चारा प्रजातियों का चयन तथा सामुदायिक संसाधनों का संरक्षण आवश्यक हो जाता है। यदि पशुओं को पर्याप्त एवं संतुलित पोषण नहीं मिलता, तो उनकी उत्पादकता में गिरावट आती है, विशेषकर दूध उत्पादन कम हो जाता है। इसके अतिरिक्त, कमजोर पोषण के कारण पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता घट जाती है, जिससे रोगों का खतरा बढ़ता है और उपचार पर अतिरिक्त व्यय करना पड़ता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि भीषण ग्रीष्मकाल में पशुओं का चारा प्रबंधन केवल पारंपरिक अनुभव तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि इसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश आवश्यक है। उचित समय पर चारा उपलब्ध कराना, जल एवं छाया की पर्याप्त व्यवस्था, संतुलित पूरक आहार तथा पशुओं को पर्याप्त विश्राम प्रदान करके उन्हें गर्मी के दुष्प्रभावों से सुरक्षित रखा जा सकता है। इस प्रकार सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक चारा प्रबंधन न केवल पशुओं के स्वास्थ्य एवं उत्पादकता को बनाए रखने में सहायक है, बल्कि यह सतत् पशुपालन एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
संपादक
डॉ. संजय सिंह
डॉ. वैशाली
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया